भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में जनजातीय विद्रोह : एक अध्ययन

सरोज शालिनी

भारत के विभिन्न भागों के बहुत बड़े क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों ने 19वीं सदी में कई छापामार लड़ाइयाँ लड़ी। वे आपस में संगठित हुए और उन्होंने अत्यंत जुझारू संघर्ष किया और असीम शौर्य व बलिदान का परिचय दिया। दूसरी तरफ, अंग्रेजों ने इनका दमन करने में क्रूरता की सारी सीमाएँ तोड़ दी और उन पर पाशविक अत्याचार किए।

भ्रष्टाचार और अत्याचार के हथियारों से लैस औपनिवेशिक शासन ने जब आदिवासियों के इलाकों में घुसपैठ की, तो उनमें घोर असंतोष पैदा होना स्वाभाविक ही था। आमतौर पर आदिवासी शेष समाज से अपने को अलग–थलग रखते थे, लेकिन ब्रिटिश राज उनको पूरी तरह औपनिवेशिक घेरे के भीतर खींच लाया। राज ने आदिवासी कबीलों के सरदारों को जमींदारों का दरजा दिया और लगान की नई प्रणाली लागू की। आदिवासियों द्वारा उत्पादित अन्य वस्तुओं पर नए तरह के कर भी लगाए गए। यही नहीं, आदिवासी इलाकों में ईसाई मिशनरियों की घुसपैठ को भी ब्रिटिश राज ने बढ़ावा दिया। इसके साथ ही उनके बीच महाजनों, व्यापारियों और लगान वसूलने वालों के ऐसे वर्ग को भी इन पर लादा गया, जो बिचौलिए का काम करता था। आदिवासियों को औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था और शोषण के भंवर में खींच लाने के काम में औपनिवेशिक शासकों ने इन बिचौलियों का जमकर इस्तेमाल किया।